ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-3* June-2020
Anthology : The Research

महात्मा गांधी सत्य एवं अहिंसा

Mahatma Gandhi truth and non-violence

Paper Submission: 16/06/2020, Date of Acceptance: 23/06/2020, Date of Publication: 25/06/2020

आबेदा बेगम
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
शा0 कमला देवी
राठी पी.जी. कॉलेज,
राजनांदगांव, छत्तीसगढ़,
भारत

सारांश

20वीं शताब्दी में एक महापुरूष ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया जिसका नाम था महात्मा गांधी। ये कोरे आदर्शवादी और स्वप्न दृष्टा नहीं थे बल्कि उन्होंने भारतीय जनमानस को गहराई से देखा था। उन्होंने सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह को साधन के रूप में अपना कर भारत के स्वाधीनता संग्राम का संचालन किया और भारत को आजादी दिलाई। महात्मा गांधी साध्य के साथ साधन को भी महत्वपूर्ण मानते थे। उनके जीवन में नैतिक मूल्यों का सबसे ज्यादा महत्व था। वे सत्य और अहिंसा को अपने दो फेफडे मानते थे जिनके बिना जीवित नहीं रह सकते थे। वे सत्य और अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने सत्य एवं अहिंसा की रचना 'हिन्द स्वराज' में की है जिसमें उन्होंने कहा कि ''सत्याग्रही को व्रतों से युक्त होना चाहिए जिसमें प्रथम व्रत सत्य एवं अहिंसा है।'' ग्राधी जी के सत्य अहिंसा संबंधी विचार बुद्ध और महावीर स्वामी की शांति मैत्री, करूणा, अहिंसा की भारत भूमि को सदैव पल्लवित करते रहेंगे।

In the 20th century, a great man influenced the whole world, named Mahatma Gandhi. These Koreans were not idealistic and dreamy, but they had seen the Indian public deeply. He adopted the truth, non-violence and satyagraha as a means of conducting the freedom struggle of India and gave freedom to India. Mahatma Gandhi considered instrument as important as well. Moral values were of paramount importance in his life. He considered truth and non-violence as his two lungs without which he could not survive. He was a priest of truth and non-violence. He composed Truth and Non-Violence in 'Hind Swaraj' in which he said that "Satyagrahi should be accompanied by fasts in which the first fast is truth and non-violence". , Karuna, will continue to flourish the land of non-violence in India.

मुख्य शब्द : सत्य, अहिंसा प्रेम नैतिकता, मानवतावाद, लक्ष्य, लोककल्याण, ईश्वर।

Truth, Non-Violence Love Ethics, Humanism, Goals, Public Welfare, God.

प्रस्तावना

आधुनिक युग में भारत भूमि पर एक महान आत्मा अवतरित हुई जिसे देशवासियों ने युग दृष्टा एवं युग सृष्टा, दिव्य पुरूष, बापू कहकर अपनी असीम श्रद्धा विश्वास और आदर व्यक्त किया वे थे महात्मा गांधी। वे भारत के महान राजनीतिज्ञ, समाजसुधारक, आदर्शवादी, अराजकतावादी, आध्यात्मवादी, मानवता के उपासक, संत, विचारक थे। उनकी माता पुतली बाई जो की धार्मिक प्रवृति की महिला थी उनका गांधी जी पर गहरा प्रभाव पड़ा। महात्मा गांधी की संपूर्ण विचारधारा में सत्य एवं अहिंसा मुख्य तत्व हैं, जिसके द्वारा उन्होंने मनुष्य से प्रेम और आत्मा को शुद्ध रख कर हर बड़े से बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने का संदेश दिया। वे जन सेवा को ईश्वर की सेवा मानते थे। उनका कहना था मनुष्य वही (सच्चा नैतिक प्राणी) है जो दूसरों की पीड़ा को समझता हो, इसलिए उन्होंने कहा–''वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीर पराई जाने रे''।[1]

महात्मा गांधी ने अपने जीवन में मजदूरों, दुखी किसानों, आदिवासियों, दलितों के साथ छुआ–छूत तथा स्त्री–पुरूष में भेदभाव को दूर करने का निरन्तर प्रयास किया। महात्मा गांधी के बारे में रोमा रोला लिखते है – ''गांधी जी भारत के राष्ट्रीय इतिहास के ऐसे नायक हैं जिनकी किवदन्तियाँ युगों तक प्रसिद्ध रहेंगी।'' उन्होंने मानव के साथ–साथ संतों और महात्माओं में अपना स्थान प्राप्त किया है और उनके व्यक्तित्व का प्रकाश समस्त विश्व में फैला है।

महात्मा गांधी के विचारां के दो प्रधान स्त्रोत है– पूर्वी और पश्चिमी।

पूर्वी स्त्रोंतो में गांधी जी पर माता से प्राप्त वैष्णव हिन्दू धर्म का प्रभाव तथा जैनधर्म, बौद्ध धर्म, गीता व उपनिषदों का गहरा प्रभाव पड़ा तथा पश्चिमी स्त्रोतों में बाईबिल, विशेषतः उसका पर्वत प्रवचन, टॉल्सटाय, जॉन रस्किन तथा थोरो की रचनाओं का प्रभाव पड़ा।[2]

उन्होंने जॉन रस्किन की पुस्तक से तीन बातें सीखीं–

1. एक व्यक्ति का हित सभी व्यक्तियों के हित में निहित है।
2. वकील और नाई के काम का समान महत्व है क्योंकि सभी व्यक्ति अपने काम से आजीविका कमाने का अधिकार रखते हैं।
3. शारीरिक श्रम करने वाले किसान या कारीगर का जीवन ही वास्तविक जीवन है।[3]

महात्मा गांधी रस्किन की पुस्तक से बहुत अधिक प्रभावित हुए और उन्होंने बुद्धि की अपेक्षा चरित्र पर अधिक बल दिया। वे मानते थे कि मनुष्य में दैवीय शक्ति होती है तथा आत्मिक बल होता है। अतः मनुष्य को सत्य और प्रेम अथवा अहिंसा का पालन करना चाहिए। वे मानते थे कि मनुष्य की प्रगति के लिए ईश्वर और धर्म में आस्था रखना आवश्यक है। उनके अनुसार धर्म का अर्थ हिन्दू, मुस्लिम बौद्ध धर्म से नहीं बल्कि धर्म का अर्थ मानव धर्म से था। गांधी ईश्वर के बड़े भक्त थे वे कहते है ''मेरी आंख निकाल लो, मैं नहीं मरूंगा किन्तु अगर ईश्वर से मेरा विश्वास हटा दोगे तो मैं जीवित नहीं रह सकता। गांधी जी के ईश्वर का अर्थ कोई पैगम्बर देवी, देवता नही था बल्कि ईश्वर का अर्थ सत्य तथा प्रेम था। वे ईश्वर को आचार शास्त्र, नीति शास्त्र अन्तःकरण का शुद्धतम तत्व तथा जीवन में प्रकाश का स्त्रोत मानते थे। वे कहते हैं यह ईश्वर असहायों, गरीबो में, मूक जनों के हृदय में निवास करता है इसके अलावा मैं किसी ईश्वर को नही जानता।

महात्मा गांधी के आध्यात्मिक आदर्शवाद में ईश्वर, सत्य, नैतिकता, श्रेष्ठता तथा अहिंसा इत्यादि का विशिष्ट स्थान है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सत्य और अंहिसा के मार्ग पर चलकर अन्याय का वीरतापूर्वक प्रतिकार करना।
2. आत्मबल को प्रबल बनाना, आत्म सम्मान से जीवित रहना।
3. गांधी जी के विचारो का प्रचार कर शान्ति और अंहिसा के मार्ग पर चलाकर विजेता बनाना ।

गांधी जी की सत्य की अवधारणा

गांधी जी का मानना था कि सत्य ही ईश्वर है। सत्य 'सत' शब्द से बना है। सत्य वही है जिसकी सत्ता होती है जो सर्वोपरि और अडिग रहता है। जिस पर किसी प्रकार की शंका नहीं होती है। ब्रम्हा या परमात्मा की सत्ता तीनों कालो में बनी रहती है यही सत्य है। गांधी जी अपने जीवन का उद्देश्य सत्य को खोजना, शोध करना समझते थे। उनकी आत्मकथा का नाम ''मेरे सत्य के प्रयोग''(My Experiments with the truth) था।

गांधी जी का कहना था ''एक व्यक्ति को परिवार की भलाई के लिए, एक परिवार को समाज की भलाई के लिए, एक समाज को नगर की भलाई के लिए, नगर को राज्य की भलाई के लिए और राज्य को देश की भलाई के लिए, और जरूरत पड़े तो एक देश को दुनिया की भलाई के लिए उत्सर्ग हो जाना चाहिए''।[4]

गांधी जी की विचार धाराओं के साथ अनेक विचार धाराएँ आधुनिक भारत और विश्व में आयी। कई बदलाव भी हुए लेकिन गांधी जी का सत्य अडिग रहा। यह गांधी जी के विचारों का महत्व है। आज विश्व में शांति की स्थापना के लिए गांधी के सत्यवादी विचारों की आवश्यकता है। आज पूरा विश्व अपनी कूटनीतिक चालों को अपना कर साम्राज्यवाद की नीति अपना रहा है और अनैतिक रूप से दूसरे देश की सीमा का अतिक्रमण करता है। परिणामतः प्रत्येक देश अपनी सुरक्षा के लिए हथियार की दौड़ में शामिल हो रहा है। वर्तमान में भारत की सीमा पर चीन का कब्जा, पाकिस्तान की आये दिन आतंकवादी घुसपैठ, नेपाल का सीमा पर अतिक्रमण और इसी तरह विश्व स्तर पर देखे तो अफगानिस्तान, लीबिया, ईरान, इराक, कुवैत की लड़ाई। छोटी–छोटी बातों को लेकर चलती रहती है। पूरी दुनिया आतंकवाद के कगार पर खड़ी है। भारत जैसा शांति प्रिय देश अपनी सीमा की सुरक्षा के लिए राफेल और अपाचे जैसे लड़ाकू विमान फ्रांस से मंगा रहा है जो देश की सुरक्षा के लिए आवश्यक समझा जा रहा है। पूरा विश्व हथियारों का बड़ा खरीदार बन गया है और युद्ध एक व्यवसाय। विश्व में आतंकवाद, नक्सलवाद, नस्लवाद और धर्मान्धता बड़ी बाधा बन चुका है और पूरा विश्व इससे भयभीत है।

यद्यपि पूरी दुनिया युद्ध के विनाशकारी स्वरूप से परिचित है फिर भी अपने अहम् की संतुष्टि के लिए विकसित और विकाशील देश अपनी ताकत पड़ौसी देश पर इस्तेमाल करते हैं। यही कारण है कि राष्ट्रों में आपसी कलह और युद्ध की नौबत आ जाती है। ऐसे में गांधी के सत्यवादी विचार वाकई प्रासंगिक है क्योंकि वे आदर्शवादी और सर्वजन सुखाय पर आधारित है। इंसानियत और आत्मा की सत्यता पर आधारित है और यही ईश्वर है। महात्मा गांधी अपने जीवन काल में सत्य पर अड़े रहे। वे हमेशा कहते सत्य का अर्थ केवल सच बोलना मात्र नहीं है, बल्कि विचारों में, वाणी में और आचार व्यवहार में सत्य होना ही सत्य है और यही व्यक्ति के जीवन का परम धर्म है। यह सत्य व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया पर लागू होता है। गांधी जी ने कहा ''तुम्हारी अंतर्रात्मा जो कहती है वही सत्य है''।[5]

गांधी के विचार प्लेटो, अरस्तु या मार्क्स की भांति व्यवस्थित या किसी सिद्धांत पर आधारित नहीं है बल्कि व्यवहारिक अनुभव पर आधारित, तात्कालिक परिस्थितियों में समस्याओं के समाधान करने वाले थे। वे कहते है मैंने कोई नया सिद्धांत नही चलाया, मैंने किसी नवीन सत्य की खोज नहीं की अपितु सत्य को जैसा मैं जानता हूँ वैसे ही चलने की चेष्टा करता हूँ। सत्य और अहिंसा उतने ही पुराने हैं जितने पहाड़ और पर्वत।

गांधी जी ने कहा कि हमारे सबसे बड़े दुश्मन, हमारी दुष्ट आत्माएँ हैं जो दूसरों का अहित करती हैं,

भयभीत और असुरक्षित करती हैं। अतः हमें इन गलत प्रवृतियों पर विजय प्राप्त करना है। गांधी जी ने सत्य को ईश्वर और ईश्वर या भगवान को ही सत्य कहा। इस प्रकार हमें अपने मन, वचन और कर्मो से सत्य का आचरण करना चाहिए यही गांधी जी का दर्शन है जो हमें ईश्वर की श्रेणी में खड़ा करता है। अतः गांधी जी के विचार प्रत्येक मनुष्य को श्रेष्ठ सत्यवादी जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

गांधी जी के अहिंसा संबंधी विचार

भारत में प्राचीनकाल से ही अहिंसा का अत्यधिक महत्व रहा है। गांधी जी पर बौद्ध धर्म , बाईबिल इत्यादि का प्रभाव पड़ा था। भगवान बुद्ध ने घोषणा की थी कि बैर का अंत बैर से नही अपितु प्रेम से होता है। हिंसा करना पाप है प्रत्येक प्राणी के प्रति करूणा और प्रेम रखना मनुष्य का धर्म है, जैन धर्म में भी अहिंसा परमोधर्म कहा गया है। महात्मा गांधी जी के इंग्लैण्ड से लौटने के बाद रामचन्द्र नामक जैन विद्वान का उन पर बड़ा प्रभाव पड़ा।[6] उन्होंने अनेक क्षेत्रों में इसी अहिंसा का व्यवहारिक प्रयोग किया और वे सफल भी रहे।

गांधी जी के अनुसार केवल खून खराबा न करना ही अहिंसा नही है बल्कि अहिंसा का व्यापक अर्थ है। वे कहते हैं अपने स्वार्थ के लिए गुस्से में आकर किसी को चोट पहुचाना भी हिंसा है। किसी को भी चोट पहुंचे ऐसे आचार–विचार भी हिंसा है। शरीर से ही नही मन से भी किसी को दुःखी करना हिंसा है। गांधी जी का कहना था ''आप किसी को कष्ट नहीं दे सकते कोई बुरा विचार नही सोच सकते, उस व्यक्ति के संबंध में भी जो स्वयं को आपका शत्रु मानता है।'' अर्थात् उनका कहना था – मन वचन और कर्म से किसी को कष्ट न पहुंचाया जाये। अहिंसा अर्थात् प्रेम है, जितनी आस्था प्रेम में है उतनी ही अहिंसा में है। स्वयं को शारीरिक एवं मानसिक कष्ट देते हुए भी दूसरों के सुखों के लिए प्रयास करना ही अहिंसा हैं। गांधी जी ने सत्य की तरह ही अहिंसा को महत्व दिया है और एक सिक्के के दो पहलू बताया। उनका विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा में सत्य का अस्तित्व होता है और वह स्वयं इसकी खोज कर सकता है किन्तु इस खोज में सफलता तभी प्राप्त हो सकती है जब अहिंसा को साधन के रूप में प्रयोग किया जाए। वे कहते हैं – ''क्रोध अहिंसा का शत्रु है और घमण्ड एक राक्षस है जो कि इसको निगल जाता है।'' वे आगे कहते हैं ''मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सत्य मेरा ईश्वर है उसको प्राप्त करने का अहिंसा साधन है।''

गांधी के अनुसार अहिंसा के प्रकार

विधायक अहिंसा

दूसरों को केवल शारीरिक एवं मानसिक चोट न पहुंचाना द्वेष न करना अहिंसा है। विधायक अहिंसा से प्रेम और सत्य की प्राप्ति होती है।

निषेधात्मक अहिंसा

अपने कार्यों द्वारा अथवा वाणी द्वारा दूसरों को दुःखी न करना ही गांधी जी की निषेधात्मक अहिंसा है।

निरपेक्ष अहिंसा

यह महान व्यक्ति की अहिंसात्मक पहचान है। व्यक्ति को पूर्णरूप से शाकाहारी होना चाहिए एवं अपने अहंकार को त्याग देना चाहिए यही निरपेक्ष अहिंसा है।[7]

नीतिगत अथवा नैतिक अहिंसा

गांधी जी कहते हैं वीर व्यक्ति की अहिंसा और डरपोक व्यक्ति की अहिंसा में बहुत अंतर है। वे कहते है वीर व्यक्ति की अहिंसा सर्वश्रेष्ठ होती है वह पहाड़ से भी टक्कर लेने में सामर्थवान होता है। दुर्बल व्यक्ति की अहिंसा कायराना होती है।

गांधी जी कहते हैं वास्तव में अहिंसा निष्क्रियता या उदासीनता नहीं है बल्कि अन्याय का वीरता पूर्वक प्रतिकार है। यह साहसी और वीर पुरूषों का गुण है। अंधकार और प्रकाश की तरह कायरता और अहिंसा में अन्तर है, अहिंसा योद्धा का सबसे बड़ा गुण और वीरता व निड़रता उसकी ताकत है। इसलिए वह शस्त्र युद्ध के स्थान पर साहस से हर जगह जीतता है, क्योंकि उसमें आत्मबल (हथियार की तरह) होता है। गांधी जी ने स्वयं कहा था – ''विदेशी राज्य के सामने दीन भाव से अपनी प्रतिष्ठा खोने की अपेक्षा यह कही अधिक अच्छा है कि भारत शस्त्र धारण करके आत्मसम्मान की रक्षा करे।''

महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के विचारों को अपने जीवन में उतारा। उन्होंने आजादी की लड़ाई अहिंसा के मार्ग पर चल कर भारत को स्वतंत्रता दिलाई। गांधी जी के इन विचारों से पूरा विश्व प्रेरणा लेता है। गांधी अहिंसा के न केवल प्रतीक हैं बल्कि मापदण्ड भी हैं जिन्हें हर अच्छा व्यक्ति, देश और दुनिया अपना प्रेरणा स्त्रोत मानती है।

गतवर्ष पहले अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा ने व्हाइट हाउस में अफ्रीकी महाद्वीप के 50 देशों के नेताओं को संबोधित करते हुए कहा था कि आज के बदलते परिवेश में युवाओं को गांधी जी से प्रेरणा लेने की जरूरत हे।

वर्तमान में गांधी जी के सत्य अहिंसा विचारों की प्रासंगिता

महात्मा गांधी जी के सत्य और अहिंसा संबंधी विचारों की आज भी आवश्यकता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में बहुत प्रगति की है। कृषि में सुधार हुआ। विज्ञान और तकनीकी का प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह चिकित्सा, शिक्षा, कृषि, बैंक या मंगल ग्रह तक यान भेजने में सफल रहे हैं। यह देश के विकास का प्रतीक है किन्तु दूसरी ओर भारत में आज भी अनेक समस्याएँ हैं। जातिवाद, नस्लवाद, भाषावाद, नक्सलवाद, धार्मिक भेदभाव, आतंकवाद इत्यादि का जहर दिनों–दिनों फैलते जा रहा है। देश में कालाधन, भ्रष्टाचार, घोटाले, जालसाजी बड़ी है। विश्व में ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के अनुसार 2015 में भारत की रैंकिंग 76 है। भारत के विकास में भ्रष्टाचार सबसे बड़ी बाधा है। गांधी जी की एक सौ पचासवीं वर्षगांठ पूरे भारत वर्ष में मनाया गया अनेक संगोष्ठियाँ की गई, भाषण हुए। पूरे 2 वर्ष तक कार्यक्रम करवाएं गये किन्तु उनके विचारों को अपनाने की जरूरत है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह राजनेता हो, कर्मचारी, अधिकारी हो, व्यापारी हो केवल गांधी जी पर भाषण देने से अपने को सुधार नहीं सकता बल्कि गांधी जी की

आत्मा की आवाज को महसूस करने और सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने की जरूरत है तभी भारत का विकास होगा।

निष्कर्ष

भारत से जातिवाद, धार्मिक, भेदभाव को दूर करना होगा। जो गरीब है, दीन दुखी हैं उनकी सहायता करना होगा। भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना होगा, तभी यह बुद्ध और महावीर की सत्य, अहिंसा, करूणा, मैत्री की भारत भूमि पर गांधी जी के सत्य अहिंसा संबंधी विचार पुष्पित होंगे और भारत में अमन शांति एवं भाईचारा होगा और देश समृद्ध एवं गौरवशाली होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *यूट्यूब वीड़ियों लेक्चर*
2. *डा. बी. एल. फडिया/राजनीतिक चिन्तन भारतीय एवं पाश्चात्य/साहित्य भवन/पृ.159*
3. *वही–पृ. 159*
4. *नेट गांधी जी का उत्सर्ग livehindustan.com*
5. *प्रो.पी.डी.पाठक, राजनीतिक चिंतन भारतीय एवं पाश्चात्य, उपयोगी प्रकाशन पृ. 70*
6. *डॉ. बी.एल.फडिया/राजनीतिक चिन्तन भारतीय एवं पाश्चात्य/साहित्य भवन/पृ. 165*
7. *डॉ. घनश्याम सुबराव महाडीक/अहिंसा और महात्मा गांधी, ए जर्नल ऑफ एशिया फॉर डेमोक्रेसी एण्ड डेवलपमेन्ट पृष्ट 128*